Naidunia (Indore), 24th September 2024, Naidunia City, Page-I

प्रबंधन के साथ तकनीक ने मिलाया हाथ ताकि बेहतर हो शहर का यातायात

आइएससीडीएल और आइआइटी इंदौर ने एमओयू पर किए हस्ताक्षर, अब दोनों संस्थान मिलकर करेंगे शहर के यातायात का अध्ययन

जनसंख्या बढ़ने के साथ ही शहरभर के अधिकांश चौराहों की यातायात व्यवस्था बुरी तरह चरमरा चुकी है। जरा-सी बरसात हो या फिर कोई और कारण, वाहनों के गुत्थमगुथा होते ही सड़क पर लंबी कतारें नजर आती हैं। यातायात बिगड़ने से लोगों को गंतव्य तक पहुंचने में अधिक समय लगता है। इस बिगड़ी स्थिति को सुधारने की आवश्यकता लंबे समय से अनुभव की जा रही है। इस काम को लेकर अब इंदौर स्मार्ट सिटी डेवलपमेंट लिमिटेड (आइएससीडीएल) और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी इंदौर) के बीच अनुबंध हुआ है। दोनों संस्थानों ने सोमवार को समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं।

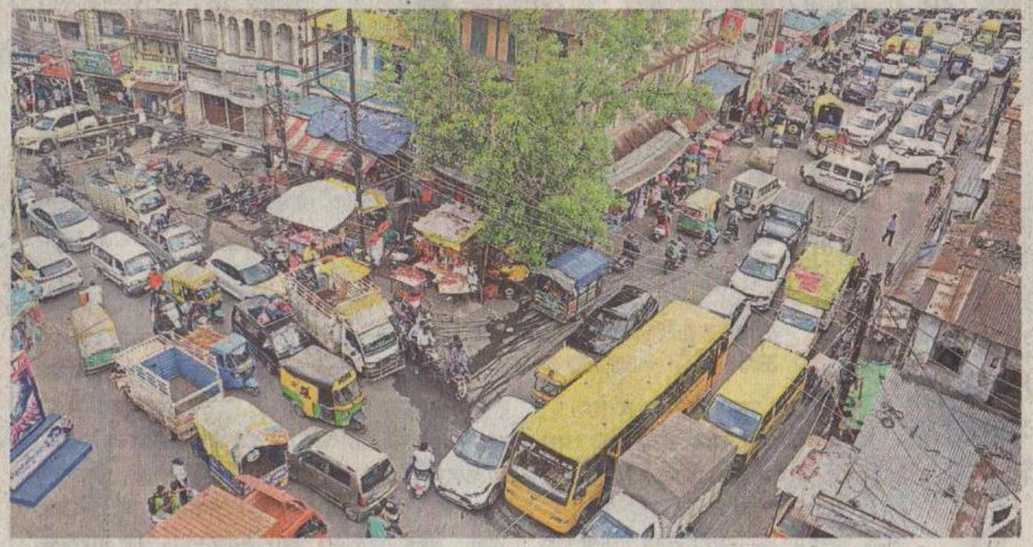

यह है छावनी चौराहे का दृश्य जहां अक्सर ट्रैफिक जाम की स्थिति बन जाती है। अब यातायात व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए और भी सघन स्तर पर प्रयास होगा। ● नईदुनिया

अब दोनों संस्थान यातायात को बेहतर बनाने को लेकर विभिन्न बिंदुओं पर काम करेंगे। यातायात संबंधित समस्याओं का अध्ययन और विश्लेषण किया जाएगा। पूरे शहर के यातायात प्रबंधन के लिए व्यापक समाधान विकसित करेंगे। यातायात प्रबंधन करने पर जोर दिया। चौराहों पर वाहनों का प्रबंधन, रूट तय करने और सर्कुलेशन पैटर्न का अध्ययन किया जाएगा। यहां तक कि प्रमुख मार्ग पर बाएं मोड़ में सुधार करने पर जोर रहेगा। वाहनों की अलग-अलग लेन बनाई जाएगी। प्रमुख चौराहों पर भीड़भाड़ कम करने पर सुझाव देंगे।

चौराहों और सिग्नल का करेंगे अध्ययन : शहर की यातायात व्यवस्था को बेहतर बनाने को लेकर चौराहों और सिग्नल का अध्ययन किया जाएगा। यह काम आइआइटी के विद्यार्थी करेंगे। रेड लाइट का समय को लेकर विश्लेषण किया जाएगा, क्योंकि कई चौराहो पर दो से तीन मिनट तक रेड लाइट रहती है। ऐसे में कई बार वाहन चालक नियमों का उल्लंघन करते हैं। वैसे ग्रीन सिग्नल की टाइमिंग पर भी अध्ययन किया जाएगा।

आइएससीडीएल और आइआइटी के अधिकारी एमओयू पढ़ते हुए।

आइआइएम इंदौर ने दिया था 5ई संबंधी सुझाव

यातायात को लेकर आइआइएम इंदौर ने 2019 में एक अध्ययन किया था। उस दौरान 5-ई के बारे में सुझाव दिया था। इसमें एजुकेशन, इंजीनियरिंग, एनफोर्समेंट, एन्वायरमेंट, इमरजेंसी पर जोर दिया था। आइआइएम ने चौराहों को व्यवस्थित करने के लिए इंजीनियरिंग पर जोर दिया था। संस्थान ने यातायात नियमों का पालन करवाने और जागरूकता के बारे में कहा था।